بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-14.06.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बनू नज़ीर नामक युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन तथा पाकिस्तानी अहमदियों के लिए विशेष रूप से दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 14 जून 2024. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज बनू नज़ीर नामक युद्ध का कुछ वर्णन करूंगा। बनू नज़ीर नामक क़बीला यहूदियों का एक ख़ानदान था। कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि बनू नज़ीर ख़ैबर के यहूदियों का एक क़बीला था। रसूलुल्लाह ﷺ जब मदीना तशरीफ़ लाए तो उस समय बनू नज़ीर का सरदार हयी बिन अख़तब था। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ीयल्लाहु अन्हा उसी की बेटी थीं। लिखा है कि हयी बिन अख़तब का वंश हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम से जा मिलता है। इसी तरह हयी बिन अख़तब के परिवार में अनेक लोग नबुव्वत की उपाधि से सुशोभित हुए तथा इस बात का उसे अत्यधिक घमंड था, वह कहा करता था कि अल्लाह हम पर दुनिया में भी बड़ा मेहरबान है तथा आख़िरत में भी वह हम पर मेहरबान रहेगा, वह हमें गुनाहों के कारण कुछ दिन का दंड देगा तथा अन्ततः जन्नत ही हमारा ठिकाना होगा। इसी सम्बंध के गर्व के कारण हयी ने रसूलुल्लाह ﷺ की शिक्षाओं से मुंह फेरा था। बनू नज़ीर नामक क़बीला अपने स्थान की दृष्टि से मस्जिद क़ुबा से आधा मील दूर था।

बनू नज़ीर नामक युद्ध रबीउल अव्वल 4 हिजरी में पेश आया। एक कथन यह है कि यह ओहद के युद्ध से पहले की घटना है। बनू नज़ीर युद्ध के कारणों के विषय में बयान हुआ है कि मक्का के

क़ुरैशियों ने बदर की लड़ाई से पहले अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल तथा औस एवं ख़िज़रज के बुत पूजकों को लिखा कि तुमने हमारे साथी अर्थात मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ का शरण दी है। हम क़सम खा कर कहते हैं कि या तो उनके साथ लड़ो अथवा उन्हें अपने नगर से निकाल दो या फिर हम पूरा अरब देश संगठित होकर तुम पर हमला करेगा। अबी बिन सलूल तथा अन्य बुतों के पूजकों को जब यह पत्र मिला तो उन्होंने एक दूसरे की ओर सन्देश भेजे तथा रसूलुल्लाह ﷺ की हत्या का दढ़ निश्चय कर लिया। जब आँहज़रत ﷺ को इसकी सूचना मिली तो आप स. सहाबियों की एक जमाअत के साथ उनसे मिले तथा फ़रमाया कि क़ुरैश ने तुम्हें घोर चेतावी से परिपूर्ण पत्र लिखा है, यह पत्र तुम्हें किसी भ्रांति में न डाले कि तुम मकरो छल कपट में पड़ कर अपने ही भाई बेटों से लड़ने लगो।

आँहुज़ूर ﷺ की यह बात उन सरदारों की समझ में आ गई तथा उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। फिर क़ुरैश ने बदर की लड़ाई के बाद यहूदियों के लिए एक पत्र लिखा कि तुम्हारे पास हथ्यिार हैं तथा तुम क़िलों के मालिक हो, इस लिए या तो तुम हमारे साथी के साथ युद्ध करो अन्यथा हम तुम पर चढ़ाई करेंगे। जब यह पत्र यहूदियों को मिला तो बनू नज़ीर ने आँहज़रत ﷺ के साथ धोखा करने पर सहमति कर ली। बनू नज़ीर ने आप स. की ओर सन्देश भेजा कि आप अपने तीस साथियों सहित हमारी ओर आएँ तथा हमारे भी तीस विद्वान आएँगे। यदि हमारे विद्वानों ने आपकी पुष्टि कर दी तथा आप पर ईमान ले आए तो हम भी आप पर ईमान ले आएंगे। अगले दिन आप स. उनकी ओर तीस साथियों के संग रवाना हुए तथा तीस यहूदी विद्वान भी आप स. के पास आ गए।

जब यहूदी एक खुले मैदान में निकले तो उन्होंने एक दूसरे से कहा कि तुम इन पर कैसे हमला करोगे, जबकि उनके साथ तीस साथी हैं। अतएव यहूदियों ने आपस में विचार किया तथा फिर आँहुज़ूर ﷺ को सन्देश भेजा कि आप स. तीन विद्वानों को लेकर आएँ, हमारे भी तीन ही विद्वान होंगे। इस आँहुज़ूर ﷺ तीन विद्वानों को लेकर रवाना हुए। यहूदियों के तीन विद्वानों के पास छुरे थे, परन्तु यहूदियों की एक शुभचिंतक महिला ने एक अन्सारी सहाबी को यहूदियों के पूरे षड्यन्त्र की सूचना दे दी। आँहुज़ूर ﷺ को जब इस साज़िश का पता चला तो आप स. अपने साथियों के साथ यहूदियों के क़िलों की ओर रवाना हुए तथा उनको घेर लिया तथा पैग़ाम भेजा कि जो स्थिति प्रकट हुई है उसके होते हुए मैं तुम्हें मदीने में रहने नहीं दे सकता, जब तक कि तुम मेरे साथ पुनः समझौता करके मुझे विश्वास न दिला दो कि भविष्य में तुम समझौता नहीं तोड़ोगे तथा विश्वासघात नहीं करोगे। किन्तु यहूदियों ने समझौता करने से साफ़ इंकार कर दिया तथा इस प्रकार युद्ध आरम्भ हो गया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ؓ इस युद्ध के कारण बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि उमरू बिन उमय्या ज़मरी जिन्हें काफ़िरों ने बन्दी बनाने के बाद छोड़ दिया था, जब वे वापस आ रहे थे तो रास्ते

में उन्ह बनू आमिर के दो आदमी मिले जो आप स. के साथ सन्धि कर चुके थे। क्यूँकि उमरू को इस सन्धि का ज्ञान नहीं था इस लिए उन्होंने अवसर पाकर बेयरे मौऊना के शहीदों का बदला लेने के लिए उनकी हत्या कर डाली। जब आँहुज़ूर ﷺ को इस घटना की सूचना मिली तो आप स. बड़े नाराज़ हुए तथा इन मृतकों के परिजनों को इस घटना का बदला धन भेज कर चुकाया।

चूँकि बनू आमिर के लोग बनू नज़ीर के मित्र थे तथा बनू नज़ीर मुसलमानों के मित्र थे इस लिए समझौते के अनुसार इस हत्या की घटना के भार का अंश बनू नज़ीर पर भी पड़ता था, इस कारण आँहुज़ूर ﷺ अपने कुछ साथियों सहित बनू नज़ीर की आबादियों में पहुंचे तथा हत्या के बदले में धन का भाग देने के लिए कहा। जब आँहुज़ूर ﷺ हत्या के बदले धन लेने के लिए बनू नज़ीर के पास तशरीफ़ ले गए तो उस दिन शनिवार का दिन था। आप स. के साथ सहाबियों की एक जमाअत थी जिनकी संख्या दस से कम बयान की जाती है। आँहुज़ूर ﷺ ने जब यहूदियों से ख़ूँ-बहा (हत्या के बदले धन) की बात की तो उन्होंने कहा- हाँ, हाँ, अबुल क़ासिम, आप पहले खाना खा लीजिए फिर आपकी बात की तरफ़ आते हैं। प्रत्यक्षतः यहूदियों ने अति आतिथ्य की अभिव्यक्ति की परन्तु इसके पीछे षड्यन्त्र किया तथा आपस में आँहुज़ूर ﷺ की हत्या पर विचार करने लगे।

आँहुज़ूर ﷺ यहूदियों के मकानों में से एक की छाँव में तशरीफ़ फ़रमा थे। यहूदियों ने यह षड्यन्त्र किया कि ऊपर छत से एक भारी पत्थर आँहुज़ूर ﷺ पर गिरा दिया जाए।

शेष विवरण आगे बयान करने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि-

पाकिस्तान के अहमदियों पर आजकल फिर जटिल स्थितियाँ पैदा की जा रही हैं, अल्लाह तआला जल्द इन अत्याचारियों से मुक्ति दिलाए तथा वहाँ भी हमारे हालात शांति पूर्ण हों, ज़रा ज़रा सी बात पर मुक़दमे तथा तंग करने की कोशिश की जाती है।

हुज़ूरे अनवर ने जुम्अः की नमाज़ के बाद निम्नलिखित मृतकों के जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ान की घोषणा की तथा उनका सद्वर्णन किया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।

1- मुकर्रम ग़ुलाम सरवर साहब शहीद सुपुत्र मुकर्रम बशीर अहमद साहब ऑफ़ सअदुल्लाहपुर मंडी बहाउद्दीन, आपको एक दुष्ट अहमदिय्यत के विरोधी ने 8 जून को शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम वसीय्यत के निज़ाम में शामिल, पाँच नमाज़ों के समय पर पाबन्द, नफ़ली रोज़ों तथा क़ुर्आन करीम की तिलावत के पाबन्द, दरूद शरीफ़ बहुतायत से पढ़ने वाले, जमाअत की पुस्तकों का अध्ययन करने, दैनिक दान दक्षिणा करने तथा अति गुप्त रूप से दुर्बलों की सहायता करने वाले थे। मरहूम को दावत इलल्लाह का बड़ा चाव था। अनेक सत्य आत्माएँ आपके कारण अहमदियत में

दाख़िल हुईं। अतीत में कलम के अभियान क समय अन्य दोस्तों के संग तीन चार दिनों के लिए असीर राहे मौला होने की भी तौफ़ीक़ मिली। मरहूम में आज्ञा पालन की भावना का कमाल था। परिजनों में पतनी के अतिरिक्त तीन बेटियाँ शोक में लिप्त छोड़ी हैं।

2- राहत अहमद बाजवा साहब शहीद सुपुत्र मुकर्रम मुशताक़ अहमद बाजवा साहब ऑफ़ सअदुल्लाहपुर मंडी बहाउद्दीन। आपको भी उसी दुष्ट विरोधी ने 8 जून को शहोद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम को ख़िलाफ़त से अत्यधिक स्नेह था। आप मेहमान नवाज़, हंस मुख, हर एक से मुहब्बत का व्यवहार करने वाले, जमाअत के कामों में अग्रसर रहने वाले, दुआएँ करने वाले अस्तित्व के मालिक थे। मरहूम ने परिजनों में वालिदैन के अतिरिक्त पतनी एवं दो बेटियाँ चार साल तथा डेढ़ साल की यादगार के रूप में छोड़ी हैं।

3- मुकर्रम मलिक ज़फ़र ख़ान जोइया साहब, आप पिछले दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम अल्लाह तआला की कृपा से मूसी थे। आपके बेटे मुकर्रम मुतीउल्लाह जोईया साहब मुरब्बी सिलसिला आजकल हवाई देश में सेवा कर रहे हैं जो वालिद साहब के निधन तथा दफ़नाने में शामिल नहीं हो सके। मरहूम नेक, मुत्तक़ी, निधनों के साथी, तहज्जुद अदा करने वाले, पाँच समय की नमाज़ों की पाबन्द, जमाअत के पदाधिकारियों का सम्मान करने वाले, अनुवाद सहित क़ुर्आन की तिलावत करने वाले अत्यंत निष्ठावान व्यक्ति थे। 2005 में वसीय्यत की तहरीक के समय पर चूँकि आप पहले ही मूसी थे इस लिए अपनी वसीय्यत का भाग 1/10 से बढ़ा कर 1/3 कर दिया ताकि इस तरह मैं इस तहरीक पर लब्बैक कहूँ। अपने बच्चों को उपदेश दिया करते कि धन का बलिदान वही है जो इंसान पहले अदा करे तथा सैकरेट्री माल को याद दिलाने का अवसर न दिया जाए।

हुज़ूरे अनवर ने समस्त मृतकों की मग़रिफ़रत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम चौधरी नसरुल्लाह ख़ान साहब तथा मुकर्रम कुंवर इदरीस साहब का सद्वर्णन फ़रमाया और मृतकों के जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

<u>हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652</u>

<u>टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पजाब-18001032131</u>